

६०७६

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १६४०
क

Title अन्नपूर्ण स्तोत्र

Author

Extent ७ पत्र Age

Subject स्तोत्र

अन्नपूर्णस्तो.
नं. १०४.

6076
F-7
Complete

ॐ श्री अन्नमृणी भगवत्यै नमः ॥ ॐ
 नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौं
 दर्यरत्नाकरी ॥ निर्हुताखिलघो
 रपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ॥ १
 आलेयाचलवंशपावनकरी का ॥



अ.
१

शीशुराथीश्वरी॥ भित्तोदेहिह
पाविलेवनकरीमाताऽन्नपूर्ण
श्वरी॥ १॥ नानारत्नविचित्रभूषण
करीहेमावराडेवरी॥ मुक्ताहार
विलेवमानयुगलीवक्षोजकुंभो

नरी॥ कल्लरीशुरुवाशिलारुचि
करीकाशीपुराथीचरी॥ भिक्षा
देहि॥ २॥ योगानंदकरीरिसुत्तय
करीथभैः कनिष्ठाकरी॥ चंद्राकी
निलमासमानलहरीत्रैलोक्यर

अ.
२

ज्ञाकरी॥ सर्वैश्चर्य करीतपःफल
करीकाशीपुराथीचरी॥ भित्तोदे
हि॥३॥ कैलासाचलकंदरास्वयं
करीगौरीउमाशोकरी॥ कौमारी
निगमानगोचरकरीओंकारवी॥

जाक्षरी॥ मोक्षद्वारकपाटपाट
 नकरीकाशीपुराधीश्वरी॥ भिक्षा
 देहि॥ ध॥ भूताधीश्वरभूतिपाव॥
 नकरीब्रह्मांडभांडोदरी॥ नीलाना
 टकसूत्रभेदनकरीवित्तानदीपा

अ०
३

करी॥ श्रीविश्वेश्वरमप्रबोधनक
रीकाशीसुराधीश्वरी॥ भिक्षां देहि
उर्वीसर्वजनीश्वरीहिमवतीमा
ताहृपासागरी॥ नारीनीलसमा
नर्जतलयरीनित्यान्नधानीश्वरी

५

सर्वत्राणकरीसदासखकरी
 काशीसुराधीश्वरी॥ भिक्षोदेहि॥
 दुर्गास्वर्णविचित्ररत्नचटितंदत्तो
 करेसंस्थितो॥ वामेभावितरःपयो
 यररसंसौभाग्यमाहेश्वरी॥ भक्त्या

६

अ.
ध

भीष्टफलप्रदासुभकरीकाशी
पुराणीश्वरी॥ भिक्षोदेहि॥ ॐ ह्रीं
कारीत्रिशुरीश्वरीभगवतीहेमा
मरीशंकरी॥ चंडीभैरवयोगिनी
ऊलवतीक्ष्माक्षसंहारिणी॥ ना

नारत्नविचित्रभूषणयुक्ताकाशी
सुराधीश्वरी॥ भिक्षादेहि॥ य॥ चंद्रा
कीनलकोटितीतसदृशांचंद्रार्क
वर्णेश्वरी॥ चंद्रार्कमिसमानऊँत
लथरीचंद्रार्कविंभाथरी॥ मालासु

अ.
५

स्तकपाशासंजगत्थरीकाशीपुरा
पीथरी॥मिर्चादेहि॥५॥आदिर्चा
तिसमस्तवर्णनकरीशंभुप्रभा
वाकरी॥काश्मीरीत्रिपुरेश्वरीत्रि
लहरीसत्योज्जराशर्वरी॥कामा॥६

तात्तकरीमनोत्सवकरीकाशीषु
राथीचरी॥ भिन्नोदेहि॥ १०॥ सर्वत्रा
नुकरीसदाखवकरीनित्यान्नदा
नीचरी॥ दत्तानन्दकरीमहामय
करीविश्वेशरीशेषरी॥ सादान्मोक्ष

अ.
६

6

करीनिरामयकरीकाशीपुराथी१
श्वरी॥ भिक्षादेहि॥ १॥ लीलानाटक
सूत्रभेदनकरीविज्ञानदीर्घाकरी
श्रीविश्वेश्वरमप्रबोधनकरीसौ१
भाग्यमाहेश्वरी॥ भक्ताभीष्टक१

रीफलप्रथकरीकाशीपुराथीध्व
री॥ भिक्षो देहि॥ ११॥ प्रातःकालमेव
नरः प्रतिदिनेषामैव संभजनी॥ सु
त्रेयौत्रपुराणपुराणफलित्तसौभा
ग्यसंयत्करी॥ स्वर्गाभोगयशःत्रि

६६

अ.
७

7

येषु भकरी काशीपुराधीश्वरी.
मितां देहि ॥ १३ ॥ अत्र पूर्ण सदा
पूर्ण शंकर प्राणवल्लभे ॥ ज्ञानवैरा.
ग्यसिद्धये अत्र पूर्ण नमोस्तुते ॥ १४
शुद्धि श्री अत्र पूर्ण स्तोत्रं ॥ संपूर्ण